वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 37	Year 4	Volume I	October 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

ईश्वर के साथ प्रेम निस्वार्थ होना चाहिये

एक बार की बात है एक बहुत बृद्ध महिला अमेरिका के बहुत महान राष्ट्रपति अबराहम लिंकन से मिलने गई और अपने साथ खुद बनाई हुई मिठाई एक डिब्बे में डाल कर ले गई । अबराहम लिंकन ने मिठाई का डिब्बा देखकर पूछा––मां, इस में क्या है। उस बृद्ध महिला ने बताया कि वह अपनी बनाई हुई विशेष मिठाई उस के लिये लाई है। अबराहम लिंकन ने धन्यवाद करते हुए कहा –– और आपकी क्या समस्या है?

बृद्ध महिला ने मुस्कराते हुये कहा –– आदरणीय राष्ट्रपति महोदय मैं आप के पास कोई निजी कार्य के लिये नहीं आई हूं। मुझे पता लगा कि आप को यह मिठाई बहुत पसन्द है तो बना कर आप के लिये ले आई।

अबराहम लिंकन की आंखो से आसूं टपक पड़े। कुछ देर बाद अपने को सम्भालते हुये बोले––आपके इस प्यार भरे उपहार ने मेरा हृदय द्रवित कर दिया है। जब से मैं इस राष्ट्रपति के पद पर आया हूं लाखों व्यक्ति मुझे मिलने आये, पर तुम पहली हो जिसका कोई निजी कार्य नहीं था या जो मुझ से कुछ चाहती न हो।

इस ऐतिहासिक घटना को हम ईश्वर के साथ अपने प्रेम को जोड़ कर देख सकते हैं। जिस प्रकारं अबराहम लिंकन के पास जो कोइ भी मिलने जाता वह कुछ पाना ही चाहता था इसी तरह हम सभी भी ईश्वर को तभी याद करते हैं जब कोई

निजी स्वार्थ होता है या हम किसी समस्या से घिरे होते है और कुछ तो हमारे में ऐसे है जो कि ईश्वर ही उसको मानते हैं जो मुसीबत से निकलने के लिये जादू की कोई छड़ी दे दे। अक्सर हम ईश्वर की प्रतिमा के आगे दो मिनट कें लिये खड़े

Contact / सम्पर्क करें :

Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

होते हैं और ढेर सारी इच्छाएँ, जिसमें अधिक हमारे सुख और आराम के साधनों के लिये होती हैं, उसके आगे रख देते है, यही नहीं हम चाहते भी यह हैं कि हमारा काम तुरन्त हो जाये। परन्तु यह सब ईश्वर के आगे काम नहीं करती। ऐसे में हम ईश्वर के नाम पर बाजार में घूम रहे भगवानों का सहारा लेते है। मैने अपने जीवन में ही बहुत से साकार ईश्वर को मानने वालों को ईश्वर बदलते हुये देखा है । उनके लिये ईश्वर वही है जो हमारी ठीक या गलत इच्छा को पूरा कर दे। आज एक बाबा है तो कल दूसरा । उनसे पूछो कि इस बाबे को क्यों मान रहे हो तो जवाब मिलेगा——— जिस ने भी इस को माना उसकी दिल की मुराद पूरी हो जाती है, जो मांगा वही मिलता है।

बहुत कम ऐसे लोग हें जो ईश्वर को ठीक तरह से समझ पाते हैं और ठीक स्तुति, प्रार्थना करते हैं। जिस प्रकार एक मानव दूसरे मानव को पाने के लिये निस्वार्थ प्रेम करता है उसी प्रकार हम ईश्वर को भी प्रेम द्वारा ही प्राप्त कर सकते है। केवल प्रार्थना करने से ही ईश्वर से मेल नहीं हो जाता। उससे भी अधिक आवश्यक है कि हम वैसे बनने का प्रयत्न करे, जो हम प्रार्थना में कह रहें हैं। ईश्वर से तो हम कह रहें हैं ——ईश्वर हम पर दया करो। पर यह प्रार्थना करने का हमें मौलिक अधिकार तभी है, जब हम भी ईश्वर के बनाये प्राणियों पर दया करें। हमारा अन्तर मन भी ईश्वर से तभी जुड़ेगा जब हम ईश्वरीय गुणों को धारण करते हैं।

ईश्वर के पास सिर्फ़ निजी इच्छाओं को लेकर न जायें अपितु दसरों के लिये भी प्रार्थना करें।

वेदों में जों भी प्रार्थनायें हैं उनकी तीन खास बातें हैं–

सब से पहले ईश्वर की स्तुति धन्यवाद की जाती है। उसके बाद जो भी प्रार्थना की जाती है वह सब के कल्याण के लिये की जाती है ।

कोई भी प्रार्थना निजी कार्य की पूर्ति के लिये नहीं होती

कुछ वेदों की प्रार्थनाये उदाहरण के लिये दी जा रहीं हैं

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्।।
सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान।
सब पर कृपा करो भगवान् सबका सब विधि हो कल्याण।।

हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी,
सब हो निरोग भगवन्! धन–धान्य के भण्डारी।
सब भद्र–भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों,
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

शान्ति पाठ,

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, जल में, थल में और गगन में,
शान्ति कीजिये, अन्तरिक्ष में, अग्नि व पवन में,
औषधि, बनस्पति,बन उपवन में,सकल जगत में, जड़ चेतन में,
शान्ति कीजिये, शान्ति कीजिये, शान्ति कीजिये,

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

सही पथ के राही

श्रीमति अनिता

सात्विक साधक लाख कठिनाइयाँ आने पर भी अपने पथ से विचलित नही होता। ईश्वर के प्रति अटूट प्रेम, गुरु के प्रति अनन्य श्रद्धा तथा सभी प्राणियों के प्रति सदभाव उसके हृदय में बने ही रहते हैं। वह इस बात को जान गया होता हे कि सुखःदुख तो कर्मो का फल है जो भोग कर ही खत्म होता हैं इसलिये सुखःदुख उसे प्रभावित नही करते और दुख से वह कभी विचलित नहीं होता।

ऐसे पथ का राही बनना ही हम सब का उदेश्य होना चाहिये। परन्तु इस के लिये आवश्यक है, हृदय हमारा कोमल हो, प्रेम की धारा कभी उस में सूखने न पाये साथ ही यह ज्ञान भी जागृत रहे कि आनन्द स्वरूप ईश्वर को पाना ही एकमात्र लक्ष्य है। उस परम लक्ष्य को पाये बिना हम चैन से न बैठें। हमारी पूजा, ध्यान, भक्ति, ध्यान व सेवा का एकमात्र केंद्र वही ईश्वर हो। रज और तम तब स्वतः विलीन होते जायेगें, वासना क्षीण होते होते नष्ट हो जायेगी और एक दिन हम अपने शुद्ध स्वरूप में स्थिर हो जायेंगे।

साधना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। अभ्यास और ध्यान उस के मुख्य अंग है। भगवान राम ने अपने गुरुवर वसिष्ठ से पूछा––''गुरुवर ! शरीर को ठीक रखने के लिये तो प्रतिदिन हम अच्छे से अच्छा पोष्टिक भोजन देते हैं, आत्मा को क्या खिलाये? गुरुवर वसिष्ठ बोले––'' हे राम आत्मा का भोजन ईश्वर का ध्यान है। जब तक मनुष्य ध्यान नहीं करता, आत्मा तृप्त नहीं होती।''

निरन्तर अभ्यास से ही हम उस लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। मानव का अनमोल चोला पाकर भी, जो कि वहुत अच्छे कर्म करने के बाद ही मिलता है, अगर हम दुःखी रहें तो यह बहुत लज्जा की बात है। जब सच्चे आनन्द का दाता वह ईश्वर हर समय हमारे साथ है, जो ज्ञानमय है, तो बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम उस सच्चिदानन्द ईश्वर से अपना सम्बन्ध बना कर रखें। जब हम ऐसा करते हैं तो हमारा सुख बाहरी परिस्थितयों पर निर्भर नहीं करता क्योंकि ईश्वर की उपासना द्वारा जो आत्मा को आनन्द मिलता है, उसके आगे दूसरे सब सुख फीके हैं।

यह सम्पूर्ण जगत ईश्वर में स्थित है। प्रकृति अपने गुणों के अनुसार कार्य करती है। कर्मो के अनुसार हमें इस जगत में भेजा जाता है। आत्मा मरती नहीं वह कर्मो के अनुसार इस जगत में विभिन्न योनियों में आती है व यह आने जाने का क्रम चलता रहता है। हमारे कर्मो का फल व किस योनी में हमने प्रवेश करना है, इसका फैसला वह न्यायकारी ईश्वर करता है। वह कण–कण में व्याप्त है, अनन्त, निर्भय, स्वतन्त्र, दिव्य व आनन्दस्वरूप है। उसे जान लेना ही हमारा अतिंम लक्ष्य है। उस के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा व भक्ति ही हमें इस संसार में स्थिर रखती है। इस संसार में सब कुछ उसका बनाया

हुआ है व उस में ही समा जाने वाला है। सब प्राणियों को प्राण देकर पालने वाला वही ईश्वर है इसलिये प्राणियों से प्यार व उनकी सेवा ही उस ईश्वर की भक्ति है।

जब वह प्रभु हमारा पिता है तो उसकी और हमारा खिचना स्वाभाविक है। हम उस को चाहते हैं, उस की आकांक्षा करते हैं, उसके दर्शन करना चाहते हैं। यहीं से भक्ति का आरम्भ होता है। भक्ति के उदय होने पर संसार धीरे–धीरे छूटने लगता है। कामनायें निरर्थक जान पड़ती हैं। ईश्वरीय सुख अनुपम है, उसे जानने के बाद जगत के सुख अर्थहीन प्रतीत होते हैं। तब हृदय में उसके बनाये जगत की सेवा की लालसा खुद व खुद पैदा होती है। जितना हम दूसरे के हित के बारे में सोचते हैं, वैसे–वैसे हमारी सामर्थ्य उस प्रभु की कृपा से बढ़ने

लगती है। दुखियों की सेवा से मन को आनन्द मिलने लगता है। मन सत्संग की तलाश में रहता है। यही तो है मोक्ष। मुण्डकोपनिषद मे कहा है——जो सर्वज्ञ व सर्वव्यापक है, जिसकी महिमा भूलोकादि सब स्थानों में है, जो प्राण व शरीर का संचालक है, जो अन्न आदि भोगों में विराजमान है उस ईश्वर को ज्ञानी लोग हृदय में स्थिर कर व जानकर साक्षात्कार करते हैं।

जब हम दूसरे के हित का चिन्तन करेगें तो हमारा सामर्थ्य अपने आप बढ़ता जायेगा। जितना अधिक हम दूसरों के प्रति कृतज्ञता का भाव मन मे उत्पन्न करेगे, उतनी हमारे मन की शान्ति बढ़ेगी। मान भोगने की वस्तु नहीं, देने की वस्तु है। सत्संग हमें साधारण मानव से ऊपर उठाकर प्रभु के समीप ला देता है। हमें एक बात सदा याद रखनी है कि जिस सर्वव्यापक की खोज में हम सब लगे हैं, वह हमारे अन्दर ही विराजमान है। जब अन्दर झांकना शुरू करेगें तो उस के समीप आते जायेंगें।

जब हम उस सच्चिदानन्द के रंग में रंगने लगेंगे तो जीवन से प्रमाद, आलस्य व अधिक निद्रा खुद व खुद विदा होने लगेगी। हम जितना ऊची वस्तु पाना चाहते है, कीमत भी उतनी अधिक देनी पड़ती है। पर उस ब्रह्मम ज्ञान को पाने के लिये जो भी कीमत देनी पड़े कम है। कितनी भी व्यस्तता क्यों न हो हम अपनी ध्यान की क्रिया को न छोड़े।

जीवन का हर दिन एक नये उत्साह के साथ जीये, मानो आज ही वह दिन है जब परम सत्य के दर्शन होने वाले हैं। जीवन संयमित हो, बिखरी हुई वृत्तियों को मोक्ष की तरफ ले जाना ही एक लक्ष्य हो। नश्वरता में शाश्वत के दर्शन होने लगें। मृत्यु का ब्रह्म जाल हमें जकड़ न पाये। शुद्ध, चेतन,नित्य का अनुभव हमें जीते जी हो जाये व भक्ति में प्राप्त होने वाली नदी के हम नाविक बने रहे।

कई बार साधक काफी प्रयत्नों के बाद भी सफल नहीं होता कारण उसके पांव बीच में ही डगमगा जाते हैं । ऐसा तभी होता है जब साधक राक्षसी प्रबृतियां ——काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार पर विजय पाने में असमर्थ रहता है और उन राक्षसी प्रबृतियों को अपने पर शासन करने देते है। हमारा वेद कहता है——— हे सकल जगत को बनाने वाले, सब ऐश्वर्यों से युक्त, शुद्व स्वरूप, सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सारे दुर्गण, दुर्व्यसन——काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकारे दूर कर दीजिये, ताकी जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हैं, वे हमें प्राप्त हों। दुख का मूल ही ये दुर्व्यसन हैं। जब ये दुर्व्यसन दूर हो जातें हैं तो दुख अपने आप ही दूर हो जाते हैं। इसलिये साधक के लिये यह आवश्यक है कि पहले व्यक्ति इन दुर्गणों से छुटकारा पायें।

श्रीमती अनिता एक महान विचारक हैं

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

Your lessons in spirituality can come from highly unexpected corners

The Mughal Emperor Akbar was out hunting when it was time for namaz. As proof of his humility and devotion, he knelt down on the forest floor and began praying. Suddenly a peasant woman came rushing in, tripped over him and fell. Picking herself up, she continued to run, without caring to apologise. The king was furious, but did not want to interrupt his prayers. He had just finished them, when the woman reappeared. With her was her husband. Enraged, Akbar thundered, 'How dare you bump against me and walk away without a word? I am your Emperor, woman!'

The woman, however, looked at him unperturbed. “Your Majesty,” she replied fearlessly, “I was looking for my husband who was lost in the forest and so had no eyes for anyone else. Your Majesty was praying to the Almighty who rules over the entire universe and yet you saw not Him but an unworthy woman like me!'

Akbar realised that he was far from humble and let the woman go with a smile. He later confided to his friends that a simple peasant woman had taught him to examine his thoughts and the true meaning of prayer.

It is true that your lessons in spirituality can come from highly unexpected corners and it can be a simple mortal, provided we remain open to see the hidden message in small events of life. And on many occasions people after having their life in reading of holy scriptures remain bereft of spiritualism in its true sense.

There is a similar anecdote my husband will narrate--- His name is Lakhi. For almost seven years, I had been seeing him begging in the main bazaar of our town. He'd beg during the day and late in the evening he'd take his regular quota of liquor without fail. Almost everybody in that bazaar knew about his addiction but would still give him alms as if it was their sacred duty to take care of his need. This outrageous practice would quite often leave me fuming, but the best I could do was to gnash my teeth.

One day, it was our daughter's birthday. I was keen to do some charity for the needy on this occasion. As I set out from my home, Lakhi was the first to come my way. Quite confused about what to do, I thought to myself that it wouldn't be proper to single him out on this happy occasion and gave him a 50-rupee note. However, I couldn't refrain from giving him an unsolicited piece of advice: “Don't take liquor with this money.”

He rolled his eyes and kept on gazing at me. Then he exclaimed gruffly, “Sethji, even the Almighty doesn't put any condition, whereas this paltry donation of yours has come with a condition. Please take back your alms. God is there to look after me.” Squirming with embarrassment, I was totally stunned as he threw back that 50-rupee note at me. It was a beggar, not some spiritual guru, who had given me a lesson in spirituality.

Lesson is that, accept entire Universe to be your teacher. Every man is in some way superior, use that to improvise yourself. Further, seek commonality with others on this planet. Once we have this approach, we will see something good in all we come across and that is the best book for the life.

सम्पादकिय

किस कदर गिर गये हैं हमारे जीवन के मूल्य

अभी उत्तर प्रदेश के मुजफफर नगर में घटित यह घटना उजागर करती है कि किस कदर हमारे जीवन के मूल्य गिर गये हैं। घटना का संक्षिप्त विवरण इस तरह है––––एक बिन विवाही लड़की ने शहर के एक प्राईवेट क्लिनिक में बच्चे को जन्म दिया। डाक्टर, जिसका नाम जितेन्द्र चौधरी है, ने लड़की को समाज की नजरों से बचने के लिये इस बात पर राजी कर लिया कि वह बच्चे को उसी के पास छोड़ दे।

अब डाक्टर ने बच्चो को बेचने के लिये सौदाबाजी प्रारम्भ कर दी और कलीम अहमद से 20000 में सौदा तय हुआ। अभी कलीम अहमद पैसे का बन्दोबस्त करने में ही लगा था कि कि दूसरा व्यक्ति 50000 रू देकर बच्चा ले गया। कलीम अहमद का यह सोचना वाजिव था कि उसके साथ धोखा हुआ है और उसने पुलिस में रपट कर दी। डाक्टर पुलिस हिरासत में है और बच्चा अस्पताल में।

यह घटना इस बात को उजागर करती है कि किस कदर हमारा नैतिक पतन हो गया है। यदि इतनी मुश्किल प्रतिस्पर्धा में डाक्टरी के लिये चयन पाकर और लाखों रूपया खर्च कर यही कुछ करना है, तो अच्छा हो हम पढ़े ही न। आज का मानव भौतिक तौर पर जितना अमीर होता जा रहा है अध्यात्मिक तौर पर उतना ही गरीब। आज वह अपने अहम् के बारे में तो चिन्तित है पर अपनी अन्तर आत्मा के बारे में नहीं। आत्मा को मारने का इस कदर आदी हो चुका है कि वह कहता है––आत्मा है ही कहाँ? आज आत्मा को मार देने के बाद उसका वही हाल है जैसे कि आप बैठे तो वॉलवो बस में हैं पर आपकी बस का चालक नशे से धुत्त है। कहीं भी आपकी बस दुर्घटनाग्रस्त हो सकती है।

प्रश्न यह है कि क्यों हो रहा है ऐसा। मेरा मानना है कि आज घर में कोई भी ऐसी खिड़की नहीं खुलती जहां से अच्छे विचार आयें। माता पिता दोनों अधिक से अधिक कमाई करने में लगे हैं। बच्चों को कैरियर बनाने की गोली खिलाई है, जो भी समय होता है या स्कूल में या कोचिंग सैंटर में , उसके बाद जो समय बच गया वह सोशल नेटवर्किंग में चला जाता है।

मन्दिर, गुरद्वारा सभी जा रहे हैं पर दो मिन्ट के लिये भगवान से अपनी भौतिक इच्छाओं या मनोकामना को पूरा करने का निवेदन लेकर। । बाबाओं और गुरूओं के पास, मजारों में जा रहे है अपनी मनोकामना को तुरन्त पूरा करने का उपाय पूछने के लिये। आर्यसमाज के पण्डित कह रहें है संस्कृत सीख लो, मन्त्र याद कर लो और हवन में आहुति दे दो, घर में बुलाकर हवन करवा लो संस्कार करवा लो । यही नैतिक शिक्षा के नाम पर रह गया है। उनसे कोई पूछे संस्कृत तो भाषा है उसमें अच्छी बात भी कह सकते हैं और बुरी बात भी, उसका नैतिक शिक्षा से क्या मतलब। यह शिक्षा तो किसी भाषा में भी हो सकती है। अगर यही बात होती तो जिन देशों में संस्कृत नहीं और अंग्रेजी या दूसरी भाषा है, वे आचरण विचार और नैतिक मूल्यों में हमारे से आगे न होते। कहने का अर्थ है कि आज कोई भी ऐसा साधन नहीं रह गया जहां हमारे बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिले। वह समय ही खतम हो गया जब धार्मिक कथाएं होती थी और लोग सब काम छोड़कर सुना करते थे।

ऐसे में सब से अच्छा साधन है कि हम बच्चों के साथ कुछ समय अवश्य बितायें और उस समय नैतिक शिक्षा पर बात

करें। उन्हें अच्छी पुस्तकें ला कर दें और ऐसी पुस्तकों का पढ़ना हमारी दैनिक दिनचर्या का अंग बन जाये। जो भी पुस्तक में अच्छा विषय नजर आये हम धर में सब सदस्यों को बिठाकर चर्चा करें। इस से आपस में प्यार बढ़ेगा और हम एक दूसरे को बेहतर समझ पायेंगें।

महात्मा हंसराज ने जीवन में मानवीय मूल्यों को लाने के लिये निम्न कुछ बातें कही है।

1 प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है वह अपने जीवनदाता, निर्माता, पालक, संचालक परमेश्वर का प्रातः सांय, स्मरण और धन्यवाद करें।

जैसे भोजन के बिना शरीर कमजोर हो जाता है उसी तरह से प्रभु भक्ति के बिना आत्मा कमजोर हो जाती है और ऐसे में गलत रास्ते पर भी जा सकती है।

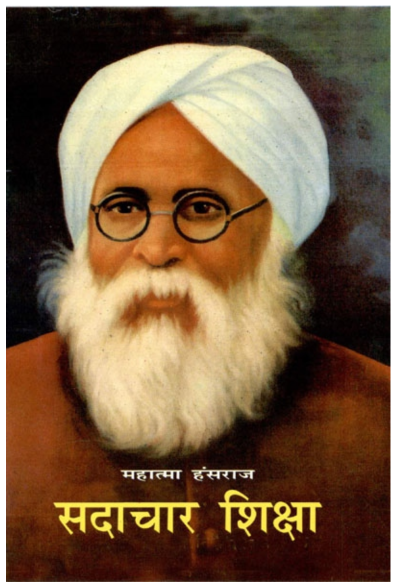

2 स्वाध्याय जो पुस्तकें हमें जीवन लक्ष्य की और प्रेरित करें। जो हमें कर्तव्य, धर्म, जीवन के मूल्यों की ओर सचेत करें, ऐसी पुस्तकों को हर व्यक्ति लगातार अपनी दैनिक दिनचर्या का अंग उसी तरह बनाये जैसे हम भोजन खाना नहीं भूलते। अच्छी पुस्तके और मित्र औषधि का काम करते है। एकांत और अकेलेपन में पुस्तकें सब से अच्छी साथी मानी जाती हैं। स्वाध्याय का एक और अर्थ भी है , और वह है अपने आप को पढ़ना, जानना और समझना कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? क्यों आया हूँ? कहां जाना है? क्या लेकर जाना है? स्वाध्याय ऐसी चीज है जिस से विचार, हृदय और जीवन बदलता हैं। स्वाध्याय से तनाव, चिन्ता, मन की अशांति, असन्तोष आदि दूर होते हैं।

3 सत्संग की अन्नत महिमा है। सत्संग मनुष्य को डाकू से संन्त बना देता है। आचार, विचार, जीवन परिवर्तन का सत्संग से बढ़कर कोईअन्य प्रेरक साधन नहीं है। इतिहास साक्षी है कि सत्संग के चमतकारी प्रभाव से न जाने कितने लोग जो कि पहले समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखे जाते थे, सन्त, ज्ञानी, तपस्वी, त्यागी एवं महापुरुश बन गये।

4 संयम जीवन का आधार है। संयम से जीवन स्वच्छ, पवित्र और स्वस्थ बनता हैं । जिनके जीवन में संयम, नियम और अनुशासन नहीं होता उनका जीवन पशु तुल्य बन जाता है। संयम से तन–मन विचार और आचरण संभला रहता है। आज तेजी से संयम टूट व छूट रहा है। इसी का परिणाम है मनुष्य पशुता और असभ्यता की ओर बढ़ रहा है। संयम से जीवन निखरता है। वास्तव में संयम ही असली योग है। जब संयम टूटता है तो पतन के रास्ते खुल जाते हैं।

5 सेवा–दूसरों के काम आने से जो मन को आनन्द और शांति मिलती है, उसका मुकावला और कोई कर्म नहीं कर सकता। जीवन की सार्थकता परोपकार और परहित में मानी गई है। महात्मा जी का कहना था––अपने से जो बने करते चलो। जो दूसरों के काम आता है वही सच्चे अर्थ में इन्सान है। वेद कहता है सब से बड़ा सुख है दूसरों के लिये जियो। दूसरों के काम आओ। गीता का भी यही संदेश है––निस्वार्थ भाव से किये कर्म मनुष्य को मुक्ति तक पहुंचाते हैं। जो दूसरों के उपकार के लिये जीवन लगा देते हैं, वही अमर पद के अधिकारी बनते हैं।

मैं अपने माता–पिता का बहुत आभार महसूस करता हूं जिन्होने मुझे आर्यसमाज का रास्ता दिखाया। उसका सब से बड़ा फायदा यह हुआ कि आर्य समाज में अच्छे विचार सुनने को मिलते थे। मुख्य आकर्षण विद्वानों के प्रवचन होते थे, जिनका केन्द्र बिन्दु जीवन के मूल्य होते थे, हवन आदि तो घर में ही हो जाते थे। आज हवन घर से निकल कर आर्यसमाज में आ गया और प्रवचन बिलकुल खत्म ही हो गये। विद्वानों के नाम पर यह गुरूकुलों से निकले पण्डित होते हैं, जिन में अधिक का आचरण आम व्यक्ति से भी खराब होता है। उन्हें क्या सुने और क्या बच्चों को सुनावायें, अधिक बातें अव्यावहारिक और पोषण युग में ले जाने वाली होती हैं उन्हें कौन सुनेगा और कौन मानेगा।

इसलिये महात्मा हंसराज की कही बातों को जीवन में लाना ही ऐसा रास्ता लगता है जिस से परिवार में जीवन को निखारने वाले मूल्य हमारे बच्चे प्राप्त कर सके।

सम्पादकिय–2

गाय प्रेम के लिये मनुष्य हत्या एक अमानवीय कृत्य

मैं शाकाहारी हूं यहां तक की जब विदेश जाता हूँ तो बाहर खाना नहीं खाता क्योंकि यह वहम रहता है कि शायद किसी भी रूप में पशु के मांस या चर्वी का प्रयोग न करतें हो। हां यह भी सत्य है कि मैं गाय उपासक नहीं हूं। मेरे लिये किसी भी पशु को अपने भोजन के लिये प्रयोग करना महा पाप है, उसमें गाय भी आ जाती है। कहने का अर्थ है कि मैं पशुओं से प्रेम करता हूं पर उस प्रेम में बह कर मैं किसी मनुष्य हत्या को स्वीकार नहीं कर सकता जैसा कि नोएडा के पास दादरी में हुआ। यह अत्यन्त अमानवीय घटना है जिस की जितनी भी निन्दा की जाये कम है।

जहां तक मैं समझ पाया हूं कि गाय को पूज्य इसी लिये कहा गया है कि उसका जीवन देवताओं की तरह कल्याण का जीवन है। उसका दूध आयुर्वेद में सव से उपयोगी कहा गया है। उसका मल मूत्र खाद का काम करता है और मरने के बाद उसकी खाल भी प्रयोग आती है, यही नहीं हिन्दुस्तान में इस बेचारी गाय के नाम पर लाखों व्यक्ति और हजारों संघटन पैसा बटेरने में लगे रहते है। जिस प्राणी का जीवन देवताओं की तरह हो, क्या वह अपनी रक्षा के लिये मनुष्य की हत्या, जिसके कल्याण के लिये जीवन दे देती है स्वीकार कर सकती है। बिल्कुल नहीं, जो भी हुआ है बहुत ही अमानवीय है। आज हमारे देश की बद किस्मती है कि राष्ट्र स्वयं सेवक संघ व विश्व हिन्दु परिषद

हिन्दु धर्म का ऐसा रूप पेश कर रहें हैं जो कि हमारे वेदों के अनुकूल नहीं।

शायद हम में बहुत सारे यह नहीं जानते कि भारत में ही काफी हिन्दु हैं, जो गाय का मांस खाने में कोई परहेज नहीं करते, खासकर विहार के आगे पुर्वी प्रान्तो में। यही हाल दक्षिण के कुछ प्रान्तों का है। यही नहीं हमारे संस्कृत के विद्वान वेदों का अर्थ भी अपने अपने ढंग से करते है। उन में कुछ कहते हैं कि गाय मांस खाना वेदों में है। आज सब से बड़ी मुश्किल हिन्दु धर्म के साथ विविधता की है। वेदों को मानने की बात तो 80 :हिन्दु करते हैं, यानी कि 80 करोड़। पर मानते अपने अपने ढंग से हैं। जो मांस खाता है वह भी हिन्दु हैं जो नहीं खाता वह भी हिन्दु हैं जो पशु की बली देता है वह भी हिन्दु है जो पशुओं को बचाने की बात करता है वह भी हिन्दु है। लोगों ने हजारों ढंग से दुकानें चला रखी है। मैं नहीं समझता गाय का मांस खाना हिन्दु धर्म से जोड़ना चाहिये। ऐसा करना हिन्दु सम्प्रदाय वालों को बांट भी सकता है। खाना–पीना सब वातावरण से प्रभावित होता है। यहां से जो अमेरिका, यूरोप आदि जाते हैं उनकी एक पीढ़ी तो परहेज कर लेती है पर अगली पीढ़ी सब कुछ खा लेती है। मुझे तो इस में कोई तुक नहीं लगता कि गाय को न खाओ और बाकी पशुओं को चाहे खा लो कहने का अर्थ है कि जो तो उपयोगी है उस को छोड़ दो और जो उपयोगी नहीं हैं उस को खा लो। यह तो धर्म की बात नहीं लगती।

It takes 20 years to build a reputation and five minutes to ruin it. If you think about that you'll do things differently.

The World suffers a lot. Not because of the violence of wrong people, but because of the silence of right people

Not a drop in the ocean but ocean in the drop

Ms Neela Sood

Mahatma Gandhi once pointed out, 'Everything you do in life will be insignificant, but it is important that you do it.' It was an idea that was well reflected in his picking up a handful of salt and galvanising the entire nation into action with his small act against mighty British. Essentially we have to believe that it is through many little acts that the big deeds are accomplished.

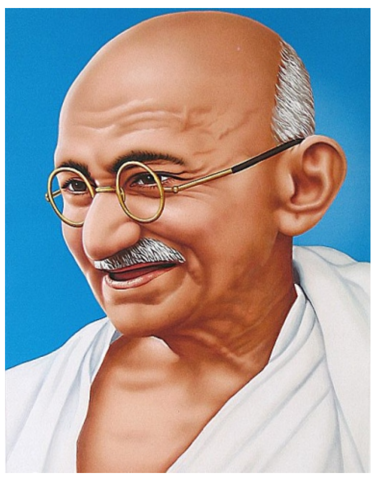

Once when Mahatma was traveling by train and was standing near the door of a speeding train, immersed in thoughts, one of his slippers slipped from his foot and fell on the receding ground below.

The moment he realized he dropped the other one also. When someone asked him why, he replied, "One slipper is of no use to me and it would be of no use to the one who gets hold of that. So I have dropped the second one so that at least he would have a full pair."

A man who was fighting with the world's mightiest empire and had entire nation looking to him for direction and guidance would not forget to do small things or would not leave these to others.

He would make time to meet the unshod man. He would take leave from deliberations of national importance to feed and bath the goat he had reared. He has left a billion dollar advice for the rulers of the states and countries-"I will give you a talisman, when in doubt, shut your eyes and think how poorest of poor will be affected by your decision and action" I am confident, most of the problems afflicting the developed as well as developing countries would be over if they follow Mahatma Gandhi but pity is that in his own country, it is reduced to garlanding him on his birthday.

There are many other lessons in spirituality one can draw from this incident. Most of us get upset when we suffer some materialistic loss and our brain would continue to dwell on that loss. But Gandhiji did not let the loss of the shoe affect his thought process. He weighed the situation, and came up with a compassionate idea. Rather than being angry or anxious like ordinary mortal, he was generous and caring. He thought he could use this opportunity to make a contribution to a needy person who might need shoes. This is spirituality.

How many of us have the capability of turning an adversity in to an opportunity or bad happening into a good one? How many of us can see the bright side of a difficult situation? How many of us can turn a negative into a positive? Gandhiji's attitude points the way for us to learn how to use problems to our benefit or the benefit of others.

The anecdote about Gandhi also shows us another aspect of his life, which is non attachment. If he were attached to his shoes like most of us, then his whole train ride and rest of the day would have been caught up in a web of anger, despair, and hopelessness. But, then Gandhi showed what the best way was to be detached. Always think that God has given us everything for our use and not to become its owner, if it serves other man's purpose, don't lose an opportunity to give it to that needy. Gandhi ji could spend the rest of his journey in productive thoughts and not cursing, ruing and riling.

It is rightly said that you can not change the whole world but you can make a very small part of it a better place to live for others. True an ocean is formed of the small droplets only but when you think like this you are not a drop in the ocean but are the entire ocean in a drop.

किसी को भी चुड़ेल, डायन या अशुभ की पदवी देकर पीड़ित करने की प्रथा के विरुद्ध आसाम के पुलिस अफसर की मोहिम

भारत में किसी महिला को भी अशुभ मानकर उसको प्रताड़ित, दण्डित करने की प्रथा बहुत रही है। यहां तक कि ऐसी अभागी महिला को बिना किसी कसूर के प्राण भी खोने पड़ते हैं। पर आसाम जैसे प्रान्तों में तो हाल बहुत ही खराब है। अभी हाल में वहां सोनितपुर जिले के विमाजुली गांव में 63 साल की ओरंग नाम की महिला पर डायन होने का आरोप लगाते हुये भीड़ ने उसका सिर काट कर मार डाला। वहां की सरकार ने इस को खतम करने के लिये कानून तो बनाया है पर फिर भी ऐसी घटनायें होती रहती हैं।

ऐसे में वहां के पुलिस के अतिरिक्त महानिर्देशक कुलिधर साकिया ने पिछले 13 साल से इस प्रथा के विरूद्ध, जिसका बड़ा कारण अन्धविश्वास है, मोहिम छेड़ी है और लोगों में खास कर जो गावों में रहते है, चेतना लाने का कार्य बड़े जोर शोर से अपने हाथ में लिया है।

आर्यसमाज अन्धविश्वासों–पाखण्डों को खतम करने के लिये ही बना था, पर आज इन गुरुकुल वालों ने अपने स्वार्थ के लिये आर्यसमाज को ही सब से बड़ा कर्मकाण्ड, अन्धविश्वासों का अडडा बना कर रख दिया है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने अग्निहोत्र को दैनिक जीवन में किये जाने वाले पांच यज्ञों में एक यज्ञ बताया था, जो कि मनुष्य को स्वयं करने का आदेश था जैसे की पितृ–यज्ञ, ब्रह्म–यज्ञ या दूसरे यज्ञ स्वयं करने के लिये हैं। पर जो आजकल आर्यसमाजों में यज्ञ किये जा रहें हें उनके लिये ब्रह्मा मुम्बई से आता है, यज्ञ का संचालन करने वाले देहरादून से आते है। मेरा हवन प्रेमियों से एक प्रश्न है कि जिस हवन को आम पण्डित ही नहीं कर सकता और मुम्बई और देहरादून से पण्डित बुलाने पड़ते हैं, उनको आम व्यक्ति कैसे कर सकता या समझ सकता है। अगर आम पण्डित करने योग्य हो तो मुन्बई या देहरादून से हजारों रूपया खर्च कर क्यों बुलाया जाये।

यहां मैं आपको बता दूं कि उस मुम्बई वाले पण्डित का 50 हजार से कम बिल नहीं होता। दक्षिणा के नाम पर यह बड़ी बड़ी रकम लेने वाले अपने आप को अन्तराष्ट्री प्रचारक कहते हैं। मैं उनको बताना चाहता हूं कि 30–40 ऐसे व्यक्तियों के सामने, जो कि आर्यसमाज में 50 साल से आ रहें हें, हवन करने से या वेदों की बात करने से आर्यसमाज का प्रचार नहीं होगा। आर्यसमाज का प्रचार करना है तो इन अन्धविश्वासों से दुखी भारत की 120 करोड़ जनता के सामने जाओं । पहले स्थानीय प्रचारक बनो अन्तराष्ट्री बाद मे बनना। ऐसे कामों में दक्षिणा नहीं मिलती, जेब से खर्चकरना पड़ता है और लोगों का अपयश और प्रहार सहन करना पड़ता है।

जो आर्यसमाज के नाम पर ऐसे हवनों का आयोजन करते हैं उनसे मेरा एक प्रश्न है

1 क्या अन्धविश्वासों और पाखण्डों के के विरूद्ध भी सारे साल में कोई कार्य करते हैं जिस के लिये आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपना जीवन दे दिया।

2 क्या कोई पैसा दुखियों के कल्याण के लिये भी खर्चा जाता है।

मैं आपको बता दूं कि जो भी दान राशि आती है उसका 95% इन पण्डितों की दान दक्षिणा और प्रीतिभोजों में चला जाता है। यह पण्डित कोई गरीब नहीं, करोड़पति हैं । गुरूकुलों में इनकी शिक्षा का पहला पाठ है, जीवन भर लेते ही रहों अपरिग्रह दूसरों के लिये है, इन के लिये नहीं। ऐसी संस्थाये किसी दान की हकदार है, यह आपको सोचना है।

Most of the things that we desire in life are expensive. But truth is that the things that really satisfy us are absolutely free- 'Love, laughter and joy'

Being happy doesn't mean everything is perfect, it means that you have started seeing beyond your imperfections.

अध्यात्मवाद (Spirituality)

कृष्ण चन्द्र गर्ग

आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सम्बन्ध क्या है – इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही भौतिक पदार्थ नहीं हैं। इन्हें आँख से देखा नहीं जा सकता, कान से सुना नहीं जा सकता, नाक से सूंघा नहीं जा सकता, जिह्वा से चखा नहीं जा सकता, त्वचा से छूआ नहीं जा सकता।

परमात्मा एक है, अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद – 1–164–46) अर्थात एक ही परमात्मा शक्ति को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। संसार में जीवधारी प्राणी अनन्त हैं, इसलिए आत्माएं भी अनन्त हैं। न्यायदर्शन के अनुसार ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, सुख, दुख – ये छः गुण जिसमें हैं उसमें आत्मा है। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं, बाकी चार गुण इसमें शरीर के मेल से आते हैं। आत्मा की उपस्थिति के कारण ही यह शरीर प्रकाशित है, नही तो मुर्दा अप्रकाशित और अपवित्र है। यह संसार भी परमात्मा की विद्यमानता के कारण ही प्रकाशित है।

शत्रु में भी ईश्वर को देखना ही अध्यात्मबाद है
भाई घन्नया शत्रु की सेना के सिपाहियों को भी पानी पिलाते थे जब गुरू गोबिन्द सिंह ने उनसे पूछा कि ऐसा क्यों करते हो तो उन्होने कहा––मैं क्या करू मुझे तो उन में भी गृरू नजर आता है। यही अध्यात्मबाद है।

आत्मा और परमात्मा – दोनों ही अजन्मा व अनन्त हैं। ये न कभी पैदा होते हैं और न ही कभी मरते हैं, ये सदा रहते हैं। इनका बनाने वाला कोई नहीं है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हर आत्मा एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है।

आत्मा अणु है, बेहद छोटी है। परमात्मा आकाश की तरह सर्वव्यापक है। आत्मा का ज्ञान सीमित है, थोड़ा है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है। जो कुछ हो चुका है और हो रहा है सब कुछ उसके संज्ञान में है। अन्तर्यामी होने से वह सभी के मनों में क्या है यह भी जानता है। आत्मा की शक्ति सीमित है, थोड़ी है, परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सृष्टि को बनाना, चलाना, प्रलय करना – आदि अपने सभी काम करने में वह समर्थ है। पीर, पैगेम्बर, अवतार आदि नाम से कोई एजैंट या बिचौलिए उसने नहीं रखे हैं। ईश्वर सभी काम अपने अन्दर से करता है क्योंकि उसके बाहर कुछ भी नहीं है। ईश्वर जो भी करता है वह हाथ–पैर आदि से नहीं करता क्योंकि उसके ये अंग है ही नहीं। वह सब कुछ इच्छा मात्र से करता है।

ईश्वर आनन्दस्वरूप है। वह सदा एक रस आनन्द में रहता है। वह किसी से राग–द्वेष नहीं करता। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से परे है। ईश्वर की उपसना करने से अर्थात उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है जैसे सर्दी में आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर निराकार है। उसे शुद्ध मन से जाना जा सकता है जैसे हम सुख–दुख मन में अनुभव करते हैं।

यह आत्मा जब मनुष्य शरीर में होती है तब वह कार्य करने में स्वतन्त्र रहती है। उस समय किए कार्यों के अनुसार ही उसे परमात्मा सुख, दुःख तथा अगला जन्म देता है। दूसरी योनिया या तो किसी दूसरे के आदेश पर चलती हैं या स्वभाव से काम करती हैं। उनमें विचार शक्ति नहीं होती। इस लिए उन योनियों में की क्रियाओं का उन्हें अच्छा या बुरा फल नहीं मिलता। वे केवल भोग योनियां हैं जो पहले किए कर्मों का फल भोग रही हैं। मनुष्य योनि में कर्म और भोग दोनों का मिश्रण है। मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म भी करता है और कर्म फल भी भोगता है।

मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। शरीर मेरा संसार में व्यवहार करने का साधन है। कर्ता और भोक्ता आत्मा है। सुख–दुख आत्मा को होता है। जीवात्मा न स्त्रीलिंग है, न पुलिंग है और न ही नपुंसक है। यह जैसे जैसा शरीर पता है, वैसा वैसा कहा जाता है। (श्वेताश्वतर उपनिषद)

ईश्वर की पूजा ऐसे नहीं की जाती जैसे मनुष्यों की पूजा

अर्थात सेवा सत्कार किया जाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन अर्थात सत्य और न्याय का आचरण ही ईश्वर की पूजा है।

कठ उपनिषद में मनुष्य शरीर की तुलना घोड़ा गाड़ी से की गई है। इसमें आत्मा गाड़ी का मालिक अर्थात सवार है। बुद्धि–सारथी अर्थात कोचवान है, मन लगाम है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं। इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं। आत्मा रूपी सवार अपने लक्ष्य तक तभी पहुँचेगा जब बुद्धि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को अपने वश में रख के इन्द्रियाँ रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा।

उपनिषद में घोड़ा गाड़ी को रथ कहा जाता है और रथ पर सवार को रथी। मनुष्य शरीर में आत्मा रथी है। जब आत्मा निकल जाती है तब शरीर अरथी रह जाता है।

परमात्मा हम सबका माता, पिता और मित्र है। वह सब प्राणियों का भला चाहता है। जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह, निर्भयता महसूस होती है। वह परमात्मा की तरफ से होता है। और जब वह कोई बुरा काम करने लगता है तब उसे भय, शंका, लज्जा महसूस होती है है। वह भी परमात्मा की तरफ से ही होता है।

831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा दूरभाष : 095014–67456

बात तो तब है जब कि उंचाइयां छूने वाला भी कृतज्ञता के भाव को प्रकट करे

अभी जब गुरूकुल कुरूक्षेत्र के प्रिंसीपल श्री देवव्रत को हिमाचल प्रदेश का गर्वनर नियुक्त किया गया तो आर्य जगत में खुशी का माहौल था। पत्रिकाओं ने बड़चड़ कर इस समाचार को छापा और आर्यसमाजों में घोषनायें हुई अभिनन्दन हुये। पर गर्वनर नियुक्त होने के बाद जो मैने मिडिया को दिये उनके ब्यानों को सुना या पढ़ा उसमें आर्यसमाज या स्वामी दयानंद का नाम नहीं था, हां गुरूकुलों और संस्कुत की बात उन्होने की पर न तो संस्कृत आर्यसमाज है न ही गुरूकुल। अधिकतर संस्कृत प्रेमी आर्यसमाजी नहीं और सैंकड़ो गुरूकुल जिनमें आर्य भी आते है आर्यसमाज से मतलव नहीं रखते। मैं इस बात से बिल्कुल न तो हैरान था न ही दुःखी। कारण आर्यसमाज से निकला हुआ व्यक्ति जब ऊपर पहुँचता है तो सब से पहले जिस से किनारा करता है वह है दयानंद और आर्य समाज।

आर्यसमाज के जलसे या प्रोग्राम में आकर आर्य समाज या स्वामी दयानन्द के गुणगाण करना कोई महत्व नहीं रखता । वह तो किसी सनातनी को बुलायेगा वह भी करेगा। बात तो तब है जब यह बात आप मिडीया के सामने या जहां आर्य समाज से सम्बन्धित लोग नहीं हैं वहां इनका गुणगाण करें ।

अभी मैं हरियाणा के लोकायुक्त जसटिस श्री प्रीतम पाल की किताव "Power of thought" पढ़ रहा था उन्होने जगह जगह स्वामी दयानंद और आर्यसमाज के प्रति कृतज्ञता दरशाई थी। मन बहुत खुश हुआ। मैं जानता हूं उनकी पुस्तक अधिकतर वे लोग पढ़ेगें जो आर्यसमाजी नहीं है। जब किसी मुकाम पर पहुँचा व्यक्ति ऐसा करता हैं तो लोग आर्यसमाज को और स्वामी दयानन्द को जानने लगते है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति। विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति।। (मनुस्मृति 5–3)

अर्थ – जल से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है। विद्या से और तप से (सब प्रकार के कष्ट उठाकर भी धर्म का आचरण करने से) जीवात्मा पवित्र होता है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

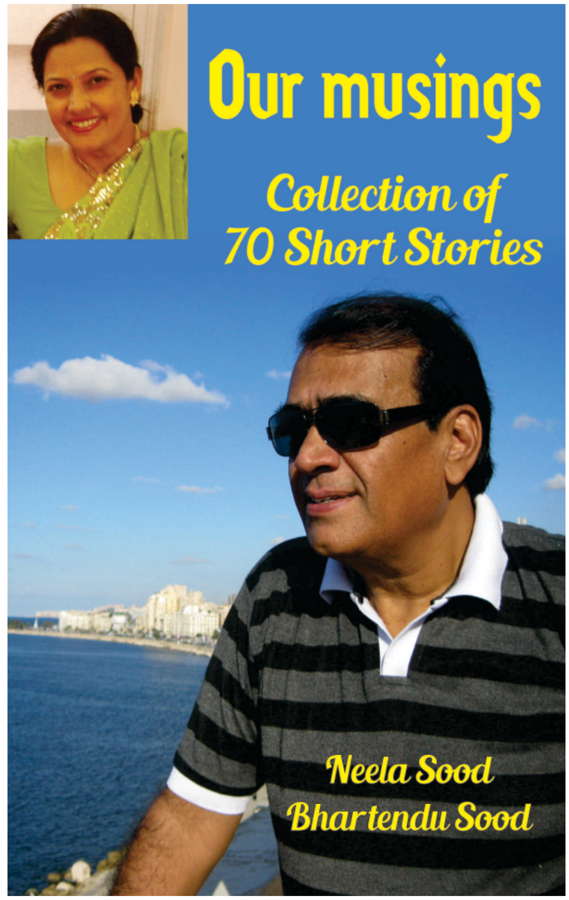

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

1. किसी गुण को प्राप्त करने व किसी दोश को छोड़ने में चाहे कितनी ही बार व्यक्ति असफल हो, किंतु गुण को प्राप्त करने व दोश को छोड़ने का पुरशार्थ करता रहे व निराश कभी न हो।
2. अच्छे व बुरे कर्मो के पीछे हमारा ज्ञान व संस्कार काम करते हैं, कर्मो को प्रवृत करने वाला ज्ञान है। ज्ञान में त्रुटि आते ही कर्म व उपासना में त्रुटी आ जायेगी।
3. जो मृत्यु को सदैव ध्यान में रखता है, वह तेजी से सोचता है, तेजी से कार्य करता है, फलतः लक्ष्य की और तेजी से अग्रसर होता है व शीघ्र मन्जिल को पाता है।
4. मन को कामादि विकार न आने देने का एक उपाय यह भी है कि स्वयं को हमेशा उतम कार्यो में व्यस्त रखना, महान लक्ष्य बनाकर उस की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील रहना।
5. जीवन की सफलता के लिये अति सावधान होकर चलना पड़ताा है, अर्थात मैं क्या देखूॅं, क्या न देखूॅं, क्या सुनू, क्या न सुनूॅं, क्या करूं, क्या न करूं ।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

कितनी ख़ूबसूरत हो जाए ये दुनिया अगर हम बच्चों की तरह संवाद करना सीख जाएँ

सीता राम गुप्ता

घर में एक नन्हा मेहमान आया है। अभी कुछ ही महीनों का तो हुआ है। एकदम मासूम और सीधासादा। बहुत आकर्षित करता है। सब उसके पास ही बैठे रहना चाहते हैं हर समय। उसकी मासूमीयत में जैसे डूब जाना चाहते हैं। इधर–उधर जाते भी हैं तो जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आवै की तरह बार–बार उसके ही पास लौटकर आ जाते हैं। वह भी कहता है कि मेरे पास बैठो। मुझसे बातें करो। मेरा ये करो। मेरा वो करो। मुझे कुछ गाकर सुनाओ। थोड़ा नाचकर दिखाओ। तोतली ज़बान में कुछ बोलकर बताओ। और भी न जाने क्या–क्या कहता रहता है। अपने पास ही तो बिठाए रखता है अधिकां ा समय। सारे दिन पूरे परिवार ही को तो व्यस्त रखता है ये नन्हा सा जीव। आप कहेंगे कुछ महीने का बच्चा कैसे बोल सकता है? जब वो बोल नहीं सकता तो कोई कैसे कहता है अपने मन की बात? आप ठीक कह रहे हैं।

वह बोलना नहीं जानता। वह हिन्दी अंग्रेज़ी या अन्य कोई भाषा भी नहीं जानता। मैं कई भाषाएँ जानती हूँ लेकिन इनमें से वो कोई भाषा नहीं समझता। इसके बावजूद हम दोनों ख़ूब बातें करते हैं। दिनभर ढेर सारी बातें करते हैं। हमारी अपनी वि ोष भाषा है। रात को जब वह अपनी प्यारी माँ के साथ सोने के लिए जाता है तो हमारे भुभ रात्रि या रूसी में स्पाकोयनाय नोच्यी कहने पर ऐसे मुस्कुराता है जैसे वह सब समझता है। हाँ, सचमुच वह सब बख़ूबी समझता है। यह वह भाषा है जिसको पूरी दुनिया के वो लोग जो एक दूसरे से नितांत अपरिचित हैं और एक दूसरे की भाषा बिलकुल नहीं जानते भी समझ सकते हैं। भाषा क्या है? संदे ों का आदान–प्रदान ही तो है। सुखद संदे ा मिलता है तो प्रसन्नता होती है। दुखद संदेह असह्य होता है। मन को अवसाद से भर देता है। हमारा नन्हा मेहमान जब मुस्कुराता है तो हम सबके मनों में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। सब कुछ भूल कर उसकी नि छल मुस्कुराहट में खो जाते हैं। जब वह किलकारियां मारता है तो उसके तो कहने ही क्या? जी चाहता है उसके साथ मिलकर हम भी भाोर मचाएं।

लेकिन जब वो रो पड़ता है तो हम आँसू न बहाते हुए भी अंदर से भीग से जाते हैं। लेकिन जब वह कुछ देर के लिए ही सही चुप हो जाता है, मुस्कुराता नहीं है, किलकारियां नहीं मारता है, हाथ–पैर नहीं चलाता है तो बाकी सबकी मुस्कुराहटें गायब हो जाती हैं। सबके अंदर कुछ खालीपन सा भर जाता है। यह संवाद ही तो है। संवाद है तो माध्यम भी होगा और भाषा भी होगी। भाषा भी है और सदियों–सहस्राब्दियों से भी पुरानी भाषा है। मनुष्य ही नहीं पूरी प्रकृति की भाषा है। कोई और न समझे तो क्या किया जाए? कबीर जानते थे इस भाशा को। तभी तो उन्होंने हर भाषा, हर विशय के ऊपर इसे तरजीह दी। इसी को प्रमुख माना। ढाई आखर प्रेम का उनके लिए दुनिया के हर ज्ञान से ऊपर रहा। इस भाषा के लिए किसी लिपि की किसी ज्ञान की ज़रूरत ही नहीं।

ढाई आखर प्रेम की यह भाषा ही दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञान है। जो इस भाषा को जानता है वही पंडित है, ज्ञानवान है, संवादकु ाल है। यही ढाई आखर हर पूजा–पाठ, हर इबादत से बढ़कर है। हर धर्म, हर भाषा बोलने वाली मां यह भाषा जानती है। हम सब भी इस भाषा को जानें–समझें, इसी को व्यवहार में लाएँ। न जानें कितने लोग इस प्रतीक्षा में हैं कि कोई हमारी भाषा को समझे और उसका उत्तर दे। बोलने के लिए किसी भाषा या ज़बान की नहीं भावों की ज़रूरत होती है और उसे समझने के लिए भी किसी भाषा या कानों की नहीं मन की संवेदन ाीलता की ज़रूरत होती है। यह तभी संभव है जब हम स्वयं सचमुच एक नन्हें ि ाु की तरह संवाद करना सीख जाएं और हर बच्चा हमें पसंद करने लग जाए। यदि बच्चे ही हमसे संवाद नहीं कर सकते, हमें पसंद नहीं कर सकते तो हमारा सारा ज्ञान, हमारी सारी विद्वता निरर्थक है।

ए डी–106–सी, पीतम पुरा, दिल्ली–110034

फोन नं – 09310172323

Email: srgupta54@yahoo.co.in

हिंदी भाषा एक वैज्ञानिक भाषा है।

अम्वाराम आर्य

सितम्बर माह हिन्दी माह के रूप में मनाया जाता है। हमारा कितना दुर्भाग्य है कि स्वतंत्र भारत के ६८ वर्ष के बाद भी हमें अपनी भाषा के प्रयोग के लिए अपनों से ही हिंदी अपनाने के लिए लड़ाई लड़नी पड़ रही हैं। स्वतंत्रता की लड़ाई इसलिए लड़ी गई थी कि स्वतंत्रता के बाद हमारी अपनी राष्ट्री भाषा होगी उसी में राजकीय कार्य होंगे, अपना एक निशान होगा, अपना संविधान होगा, अपनी लोकसभा–राज्यसभा होगी। अपनी लोक अदालतें होंगी। जहॉ जनता के अमनचैन के लिए निर्णय होंगे और पूरा राष्ट्र एकसूत्र में बंधकर अपनी खोई हुई वैदिक सभ्यता और संस्कृति को पुनः प्राप्त कर सकेगा। ये अरमान थे हमारे वीर शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के।

परन्तु दुर्भाग्य से हुआ क्या? हम अधिकतम भारतीय हिंदी भाषी होते हुये भी हम अपनी भाषा को नहीं अपना सके। अंग्रेजो का कहना था कि इन भारतीयों में ऐसा परिवर्तन किया जावे जिससे ये लोग दिखने में तो भारतीय ही लगें परन्तु इनकी सोच विलायत की हो। अंग्रेजों ने हिंदी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी जबरन थोप दी, हमारी वैदिक सभ्यता और संस्कृति पर कड़ा प्रहार किया। मैक्समूलर ने कहा वेदों में गडरियों के गीत हैं, जादू–टोना, भूत प्रेत की कथाओं के अलावा कुछ नहीं है और आर्य लोग इस देश में बाहर से आकर बसे थे। इडा (संस्कृति), सरस्वती (भाषा, सभ्यता) और भारती (जन्मभूमि) इन तीन चीजों से जो हमारी पहचान थी उससे बंचित कर दिया। हम अपनी भाषा बोलने में शर्म महसूस करते हैं, हम अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति बताते है तथा हमारा जो इतिहास लिखा गया हैं कि आर्य लोग बाहर से आये थे और द्रविड लोगों को जीतकर यहॉ बस गये। सब असत्य इतिहास लिखा गया है। अगर इस देश के मूल निवासी है इसीलिए आर्यवर्त्त ही इस देश का नाम पड़ा। परन्तु जब महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने जब ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका लिखकर मैक्समूलर के पास एक प्रति भेजी तब मैक्समूलर को कहना पडा कि ऋग्वेद संसार का सर्वप्रथम ज्ञान और विज्ञान का भंडार है। महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज गुजराती थे उन्होने ज्ञान विज्ञान को जानने के लिए संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् बने फिर हिन्दी को आर्यभाषा कहकर अलंकृत किया अपने प्रवचन भी आर्यभाषा हिन्दी में दिये यही नहीं उनके सभी ग्रंथ आर्यभाषा से ही सुशोभित हैं।

जबकि हमारे राष्ट्र के कर्णधारों की बीमार मानसिकता के कारण हम अभी भी गुलामी जीवन जीने के लिए मजबूर है। इसी से हमारा अंग्रेजी से मोह बना हुआ है। हिंदी का अपना धातुविज्ञान और उत्तम व्याकरण है। इसके प्रत्येक वर्ण का अपना विशेष महत्व और अर्थ है। किस अक्षर को कैंसे बोलना चाहिए इसकी बैज्ञानिक वर्तनी है। यहॉ तक कि यदि स्वरों का उच्चारण अन्यथा हो जावेगा तो उसके अर्थ बदल जायेंगे। अर्थ बदल जाने पर उसके भाव बदल जायेंगे। आपको हम कुछ अक्षरों और उनके अर्थों से रूबरू कराने का प्रयास इस लेख के माध्यम से कराना चाहते हैं जो इस प्रकार है– 'अ' =सब, पूर्ण, व्यापक, अव्यय, एक, अखण्ड, अभाव, शून्य।'इ'=वाला (जैसे मकानवाला) गति, निकट। 'उ'= ऊपर, दूर वह तथा और आदि। 'ए'= नहीं गति, गतिहीन, निश्चल, पूर्ण, अव्यय। 'ओ'= अन्य नहीं, वही। अन्य अक्षर इन्हीं के मेल से बने हैं। 'ऋ'= सत्य गति, बाहर। 'लृ'=सत्य, गति, भीतर। 'क'= बांधन, बलवान, बड़ा, प्रभावशाली, सुख। 'ख'= आकाश, पोल, खुला, छिद्र। 'ग'=गमन, हटना, स्थान, छोड़ना, पृथक होना।'घ'= रुकावट, ठहराव, एकाग्रता। 'च'= फिर, पुनः, बाद, दूसरा, अन्य भिन्न, अपूर्ण, अंगहीन, खण्ड। 'छ'= छाया, आच्छादन, छत्र, परिच्छद, अखण्ड आदि। 'ज'= पैदा होना, जन्म लेना, उत्पन्न होना, नूतनत्व, गति।'झ'= नाश होना। 'ट'= मध्यम, साधारण, निर्बल, संकोच, इच्छाविरुद्ध।'ठ'= निश्चय, प्रगल्भता, पूर्णता। 'ड'= क्रिया, प्रकृति, अचेतन, जड़। 'ढ'=

निश्चित, निश्चल, धारित, चेतन। 'त'= तलभाग, नीचे, इधर, आधार, इस पार, किनारा, अन्तिम सीन। 'थ'=ठहरना, आधेय, ऊपर, उधर, उस पार।'द'= गति देना, कम करना। 'ध'= न देना, धारण करना, रख लेना। 'प'=रक्षा करना। 'फ'= खोलना, खुलना। 'ब'= घुसना, समाना, छिपना। 'भ'=प्रकट, जाहिर, प्रकाश, बाहर। 'य'= पूर्ण गति, जो, भिन्न वस्तु। 'र'= देना, रमण करना। 'ल'= लेना, रमण करना। 'व'=अन्य, पूर्ण भिन्न, अथवा, गति, गन्ध। 'श'=ज्ञान। 'क्ष'= बन्ध ज्ञान, अज्ञान, निर्जीव, नाश, मृत्यु। 'त्र'= नीचे तक देना, कुल देना, सब देना, कुल, सब, सर्व, समग्र। 'ज्ञ'= अजन्मा, नित्य, कर्म, ज्ञान। 'ळ'= वाणी। (वैदिक सम्पत्ति)

यहॉ पर हम यह भी बताना चाहते हैं, अक्सर लोग यज्ञ को यग्य उच्चारण करते हैं। जबकि यज्ञ संस्कृत की यजृ धातु से बना है। अतः यग्य उच्चारण न करके यज्य जैसा उच्चारण करना उपयुक्त है। या दो अक्षरों के मेल से बना है अर्थात् इ और अ। इ का अर्थ है गति और अ का अर्थ है पूर्ण और ज का अर्थ है उत्पन्न करना। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ पूर्ण गति उत्पन्न करना अर्थात् अग्निहोत्र करना, दान देना तथा संगतिकरण।

जैसा कि हम पूर्व में कह आये हैं कि हिन्दी संस्कृत भाषा की पुत्री है। अतः जैसे संस्कृत भाषा पूर्ण वैज्ञानिक भाशा है उसी प्रकार हिंदी भी वैज्ञानिक भाषा है। हम जो लिखते हैं वही बोलते भी हैं और जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते भी हैं। अंग्रेजी में हम बोलते कुछ हैं और लिखते कुछ हैं। इसी प्रकार लिखते कुछ हैं बोलते कुछ और हैं। एक उदाहरण आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूॅ। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी अपने विद्यार्थी जीवन की एक घटना बताते थे। जबवे किसी स्कूल में पढ़ते थे तो उनसे पुस्तक पढ़ने के लिए बोला गया। उन्होंने पाठ में लिखा वाक्य पढ़ा आइ वाल्क डेली (ए ूसा कंपसल) अध्यापक ने कहा वाल्क नहीं वाक, स्वामी जी ने अध्यापक से पूछा कि एल कहॉ गया। अध्यापक ने कहा जब कान्सोनेन्ट अर्थात् भोविल के बाद जब कान्सोनेन्ट आता है तो वह साइलैन्ट हो जाता है अंग्रेजी में । भोविल और स कान्सोनेन्ट कहलाता है। कुछ दिन बाद फिर उनसे पाठ पढ़ाया गया। उन्होंने पढ़ा आइ ड्रिंक मिक डेली (ए कतपदा उपसा कंपसल) अध्यापक ने कहा अरे बेवकूफ बूद्धू कहीं का मिक नहीं मिल्क पढो। स्वामी जी कहा कि पहले तो आपने बताया था कि एल कान्सोनेन्ट हैं जो भोविल के बाद आता है वह साइलेन्ट होता है आज स्पीकिंग कैसे हो गया। वे कहते थे कि अध्यापक कोई जवाब नही दे सके वे खामोश हो गये। परन्तु आज तक कोई भी अंग्रेजी का विद्वान् इसका स्पष्टीकरण नहीं दे पाया। ऐसे एक नहीं कई उदाहरण दिये जा सकते हैं जिन अंग्रेजी के शब्दों में बोलने और लिखने में एकता नहीं है। चीन जापान ने अपने देश में बहुभाषी रखे हैं जो अंग्रेजी को चीनी और जापानी भाशा में परिवर्तित करके विज्ञान की पुस्तकें छपवाते हैं। जो शब्द उनकी भाषा में नहीं है उसे अंग्रेजी के शब्दों में अंकित कर देते हैं। हमारे देश में ऐसी प्रणाली नहीं है जिससे हम अंग्रेजी के गुलाम से हो गये हैं।

मैं, यह कहना चाहता हूॅ कि जो संस्कृत नहीं जानता वह आर्यावर्त्त अर्थात् भारत की संस्कृति वह सभ्यता एवं इसकी अलौकिक रहस्यों, विज्ञान को नहीं जान सकता और और न समझ सकता है तथा जो हिंदी नहीं जानता वह भारत को ही नहीं पहचान सकता हैं। डा0 राममनोहर लोहिया जी का यह कहना उचित है कि जो हिंदी नहीं जानता उसमें कभी ईमानदारी आ ही नहीं सकती। हमें बड़ी पीड़ा होती है जब लोग उसे ही पढालिखा या सभ्य मानने लगते हैं जो हिन्दी बोलते–बोलते बीच में जबरदस्ती अंग्रेजी शब्दों का विष धोलने की कोशिश करते रहते हैं। परन्तु सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलो से कि खूशबू आ नहीं सकती कागज के फूलों से। यह फिल्मी गाना यहॉ पर ठीक बैठता है।

हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जो सरल सुबोध रसभरी है। हमें अपने देश, अपनी मातृभाषा से बहुत अधिक प्रेम करना अपना धर्म और गौरव समझना चाहिए, इस पर श्रद्धा रखते हुए खुशहाली की कामना नित्य करते रहना चाहिए। यही हमारा परम कर्त्तव्य होगा। तभी भारतमाता की जय होगी।

अम्बाराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री, वेद सदन, महर्शि दयानन्द मार्ग, हिम्मतपुर मल्ला, हरिपुर नायक हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड–263139, मो0 9557004794

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है

कृप्या निम्न address पर सम्र्पक करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

अनुभव

अशोक कुमार

अनुभव एक ऐसी क्रिया, परिस्थितियों, वातावरण, घटनाओं का प्रभाव फल, परिणाम है, चाहे साकारत्मक हो या नाकारात्मक हो, जिनसे अतीत जुड़ा होता है। अनुभव के आधार पर ही घटनाओं का मूल्यांकन होता है भविष्य के उद्‌देश्य, लक्ष्य, निर्णय, आचरण, व्यवहार, सोच, वातावरण आदि चयन होते है समीक्षा, समीकरण, सीमाऐं निर्धारित होती हैं। ।अनुभव एक निरंतर अभ्यास, प्रयास का फल है, ये अनुमान–मापक यंत्र है, इससे प्रेरणा मिलती है। बहुत बार जब खेल के मैदान में युवा टीम हार का सामना करती है तो कहा जाता है कि टीम में कुछ अनुभवी खिलाड़ी होने चाहिये थे। यही है अनुभव की कीमत। आप को या आप के घर के सदस्य को जब कोंई बिमारी घेर ले तो अक्सर आप के मित्र कहते हैं–किसी अनुभवी डाक्टर को दिखायें। एक बात सपष्ट है कि अनुभव की अपनी ही कीमत है। अक्सर रिटार्यड डाक्टर को फिर से रखने की सिफारिश की जाती है, कारण किसी नये डाक्टर के पास वह अनुभव नहीं होता जो कि रिटार्यड डाक्टर के पास होता है। और हम उसका लाभ उठाना चाहते है।

अनुभव अभ्यास–तप और कठिन परिश्रम का निचौड हाता है। अनुभव सफलता की कसौटी है, एक कूंजी है। अनुभव विकास का मार्ग बनाता है, अनुभव से दिया उपदेश, शिक्षा मार्ग प्रदर्शित करता है, जो भविष्य को सुखमय बनाना चाहते हैं, महापुरुषों, साधु–संतों का उपदेश अनुभव पर आधारित होता है, । साधु समाज, बुद्धि जीवियों ने सत्य कहा है कि सुअवसर और कुअवसरों पर सदा अनुभव ही काम आता है। अभी हाल में जब बिलासपुर सुरंग के धसने से तीन मजदूर मलवे में फंस गये तो उस में ऐक अनुभवी मजदूर का पहले का अनुभव ही दो की जान बचा सका। कहते हैं नया एक दिन पुराना सौ दिन Old is gold

किसी कवि ने सत्य कहा है कि :– 'सकल धन संग्रह करे, आवे कोई दिन काम। समे परे, पे न मिले, माटी खर्चे दाम'।

कठिनाईयों, विविशताओं में मनुष्य सीखता है, यही अनुभव की कुंजी है।। हर मनुष्य के जीवन में कोई न कोई अनुभव होता है । कुछ नामी मनुष्यों को अपने अनुभवों को किताव के रूप में लिखते देखा गया है, अगर वह न लिखें तो दूसरे लिखतें हैं । उदेश्य यही होता है कि आने वाली पीड़ी उस से लाभ प्राप्त कर सके। इतिहास पढ़ाया ही इस लिये जाता है कि हम वह गलतियां न करें जिन के कारण देश, समाज और मानव का त्रास हुआ। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ इसी लिये पढ़े पढ़ाये जाते है कि उनके आधार पर हम अपना और परिवार का निर्माण करे। कभी सुनते हैं कि किसी के हाथ में जादू है, कला है। वास्तविकता में वे अनुभव का परिणाम होता है। कुछ लोगों का अनुभव इतना प्रभावकारी होता है कि वह समय को और हृदय में छिपी बात को भी जान लेते हैं। परिस्थितियों का परीक्षण कर लेते हैं और अवसर बचा लेते हैं। अनुभव से ही क्षमता, सक्षमता, विशलेषण गुण आते हैं। श्रेष्ठ मित्र की पहचान करनी हो तो अनेक मित्र बनाने पड़ते हैं, हर एक की रूचि, सोच, चरित्र, कर्म, कृत्ज्ञता को भांपना पड़ता है । कहते है बुद्धिमान दूसरों के अनुभव से सीखते हैं और मूर्ख अपने अनुभव से।

किसी ने कहा है कि लोहा जब गर्म हो तो चोट करो, अन्यथा प्रभाव शून्य होगा। यह बात अनुभव पर ही आधारित है। हम हजारों मुहाबरे सुनते है। वे अनुभव की ही खान है। दुनिया में कहावतें, लोकांक्तियां अनुभव आधारित होती हैं। इसी तरह अनेक बिमारियों के घरेलु नुसखे सुनने और पढ़ने को मिलते है। वे अनुभव का खजाना है

अनुभव न केवल दुख निवारक होता है बल्कि हर समय काम आने वाला कवच होता है, सफलताऐं, विफलताओं का आधार

बन जाता है। अनुभव ही अच्छे बुरे की पहचान करवाता है, हिम्मत बंधाता है। संकट में चेतावनी, चिंता समाप्त करती है, किसी के व्यक्तित्व का परिचय देती है। बड़े लोगों ने अनुभव के आधार पर कहा कि कोई व्यक्ति जब तक किसी लक्ष्य की प्राप्ती के लिए प्रयत्न नहीं करेगा लक्ष्य असम्भव है। ऐसे ही कुछ का कहना है कि अवसर की प्रतीक्षा करने वाला व्यक्ति महान नहीं होता। महान तो वह है जो अवसर को अपना दास बना लेता है, यही अनुभवी लोगों का कथन है। बुद्धिजीवियों का कहना है कि एकाग्र रहने वाला व्यक्ति निरंतर आगे बढ़ता है। अनुभव मनुष्य का स्थाई गुरू है, अनुभव से ही स्थापित हुआ कि व्यर्थ बहस से बचना चाहिए, जो मन–मुटाव, विरोध बढ़ाता है, सुनी–सुनाई पर मत जाइये, झूठ के पांव नहीं होते, सत्य सदा विजयी होता है। अनुभव ही बताता है कि सत्य का मार्ग ही धर्म, नियम, संगठता की निशानी है। काम, क्रोध, मोह लोभ यह सब अस्थाई हैं और विष तत्व हैं। प्रेम, वाणि, धैर्य ही स्थायी है। अनुभव ही बताता है कि विवादों को खत्म करने के लिए क्षमा मांगना ही एक सरल उपाय है, एक चुप सौ सुख भी अनुभव की देन है। सफल व्यक्तियों ने प्रचार किया कि ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। विद्वानों ने सत्य कहा कि सद्प्रवृतियां, सदाचरण, सतसंग और स्वाध्याय से ही जीवन में सच्चा, सुख–संतुष्टी, शांती और खुशहाली मिलती है, जैसा करोगे वैसा भरोगे, सहज पाके सो मीठा होये, लालच बुरी बला है, कथनी से करनी भली। अनुभव के आधार पर ही किसी ने सत्य कहा है, ''गुरू न हो तो रूप व्यर्थ है, विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है, उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है, साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है, परोपकार न हो तो जीवन व्यर्थ है'' यह कथन अनुभव से ही उपदेशक, विचारक और सांसारिक बनें।

मेरा स्वयं का मानना है कि अनुभव, समाज के लिए एक लालटैन का काम करता है। अनुभव जीवन में वृद्ध की लाठी के समान होता है। अनुभव समाज के लिए शिक्षक, प्रचारक, वैद्य, एक चौकीदार और सच्चे मित्र के समान होता है। मछुआरे, पशु–पक्षियों के जीवन में अनुभव एक महत्वपूर्ण तत्व है जिससे उन्हें मौसम की भविष्यवाणी होती है। महात्मा बुद्ध ने भी संसारिक अनुभव हेतु कहा कि तीन लोगों के आँसू पवित्र होते हैं– प्रेम के, करूणा के और सहानुभूति के। स्वामी महावीर ने भी कहा कि तीन बातें कभी न भूलें– प्रतीज्ञा करके, कर्ज लेकर और विश्वास देकर। इसी प्रकार विनोवा भावे ने अनुभव से कहा कि तीन बातें करो– उत्तम की संगति, विद्वान के साथ वार्तालाप और सहृदय के साथ मेत्री। कौटिल्य ने अपने अनुभव से कहा कि तीन चीजें मनुष्य को बर्बाद कर सकती हैं– शराब, घमण्ड और क्रोध। यह समस्त अनुभव पर ही आधारित है।

आइये अनुभव और अनुभवी व्यक्ति दोनों का सम्मान करना सीखें। वही परिवार और समाज आगे वढ़ता है जो कि ऐसा करता है।

मोहन भागवत् ने दो बातें बहुत ठीक कही

स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने दो बातें बहुत सही कही जिस के लिये वह प्रशंसा के पात्र है।

पहली —— हिन्दु धर्म में जो भी बातें वैज्ञानिक सिद्धान्तो के खिलाफ हैं उनको धर्म से निकाला जाये। मेरा मानना है कि यह अगर हो जाता है तो हमारी प्रगति सही माने में हो सकती है और गरीबी भी दूर हो जायेगी। उदाहरण के लिये यह बात मान ली जाये कि मान्यता प्राप्त नदियों में डुबकी लगाने से शरीर तो धुल जायेगा पर पाप नहीं धुलेंगे तो हमारा समाज बहुत हद तक सुधर जायेगा। लोग पाप करते हुये यह नहीं सोचेंगे कि चलो गंगा में डुवकी लगा लेंगे।

दूसरी —— दूसरी बहुत सही बात उन्होने यह कही कि आरक्षण के सारे ढांचे पर पुनः विचार हो। बाबा अम्बेदकर ने तो 10 साल की बात कही थी पर अव जब कि 65 साल हो गये हैं, उस सारे सिस्टम को बदली परिस्थिति में पुनः देखने परखने और विचार करने में क्या हर्ज हैं।

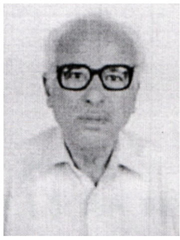

आरक्षण व्यवस्था अविलम्ब समाप्त हो

ई.जे.एस. सामन्त

आरक्षण को लेकर विभिन्न अन्तरालों में विभिन्न प्रदेशों में जन आन्दोलन हो रहे हैं। पहले राजस्थान जलता रहा, अब गुजरात जल रहा है और इसे राष्ट्रव्यापी आन्दोलन बनाने के प्रयास हो रहें हैं। राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन तो आरक्षण व्यवस्था को अविलम्ब समाप्त किये जाने के लिए होने चाहिए था। आज आरक्षण को लेकर बिना पूर्ण योग्यता के पद प्राप्ति की दोड़ लग गई है। इस मानसिकता पर विराम लगाना ही चाहिए।

आरक्षण पर राष्ट्रव्यापी बहस होनी चाहिए,सभी राजनैतिक दल आरक्षण व्यवस्था को दीर्घकाल तक चलाये रखकर अपनी वोट की रोटी सेकते रहे हैं। किसी राजनैतिक दल के सत्य को ग्रहण करने व असत्य को समाप्त करने का साहस नहीं हे जो व्यवस्था प्रारम्भ में केवल 10 वर्ष के लिए थी, उसे इतने लम्बे काल तक खींचा जा रहा है । इससे राष्ट्र का हित नही हुआ है । वर्तमान में इससे जातीय भेदभाव बढ़ा है।

आरक्षण को लेकर सारगर्भित लेख दैनिक जागरण पत्र में दिनांक 4/6/07, 8/6/07, 12/6/07, 13/6/07, तथा 14/6/07 को श्री अरूण सौरी जी ,श्री हृदयनारायण दीक्षित जी, श्री बलवीर पुंज जी, श्री कुलदीप नैयर जी, तथा श्री राजनाथ सिंह सूर्या जी के लेख छपे थे। शासन में बैठे लोगों ने इनका कोई संज्ञान नहीं लिया। आरक्षण व्यवस्था लागू करने के हितैषी लोग यह न समझें कि डा0 अम्बेडकर उनके लिए सदैव के लिए आरक्षण की व्यवस्था कर गये थे। उनके संज्ञान के लिए मैं आर्यजगत पत्रिका के 30/7/06 के पृष्ठ संख्या 6 में छपे लेख का यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ – " भारत का संविधान डा0 अम्बेडकर की अध्यक्षता में संकलित किया गया, जिस पर स्वंय डा0 अम्बेडकर की टिप्पणी, जो उन्होंने संसद में 2/9/1953 को की प्रस्तुत है– जिस संविधान का आधार केवल राजनैतिक लोकतंत्र हो, सामाजिक लोकतंत्र नहीं, वह संविधान अवश्य नष्ट हो जायेगा, मेरा वश चले तो मैं पहला व्यक्ति होऊँ जो इस संविधान को भस्मीभूत कर दूँ। संविधान राष्ट्र को समर्पित नहीं हुआ, राष्ट्र ही संविधान को समर्पित हो गया, मैं भाड़े का टट्टू था जो मैंने किया, वह मेरी इच्छा के विरूद्ध था।" यह धारणा थी स्वयं डा0 अम्बेडकर की, उपरोक्त पत्रिका के लेख अनुसार ।

क्रमशः..........2

पूरा राष्ट्र जानता है इस आरक्षण की व्यवस्था से स्थाई सामाजिक सुधार होना संभव नहीं हैं। गरीब तो इस लाभ से अब भी वंचित है। समाज मे जातीय भेदभाव बड़ा है और पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री अरूण शौरी जी के "नब्बे फीसदी अंक प्राप्त करने वाले छात्र को मेडिकल कालेज में प्रवेश नहीं मिलता है और दशमलव दो फीसदी अंक लाने वाला डाक्टरी पढ़ता है । क्योंकि आरक्षण का बैकलॉग भरना है।कोई भी उन्नत राष्ट्र अपने उत्पाद की गुणवत्ता को गिरने नही देता है । प्रतियोगिता की दौड़ में कोई भी समझदार उद्योगपति अपने उत्पाद की गुणवत्ता गिराना नहीं चाहेगा। हमारे भावी कर्णधार योग्य युवावर्ग इस राष्ट्र के उत्पाद है उनका योग्यतम श्रेणी का होना प्रगतिशील राष्ट्र के लिए आवश्यक है। आरक्षण की बैशाखी से हम राष्ट्र को आगे नहीं बड़ा सकते, योग्य व्यक्ति फुटपॉथ पर और आरक्षण की बैशाखी का सहारा लेकर अयोग्य व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है।

आर्थिक रूप को आधार मानकर आरक्षण प्रदान करना भी सही समाधान नहीं होगा। नि:संदेह आर्थिक रूप से पिछड़े समस्त जातियों को समकक्ष स्तर पर लाने का प्रयास होना चाहिए, पर इसके लिए आरक्षण को आधार बनाना उचित नहीं होगा। होना तो यह चाहिए कि आर्थिकय रूप से समस्त जातियों के पिछड़ो को पूरी आर्थिक सहायता दी जाये । उनके लिए नि:शुल्क+ उच्च्व स्तर की शिक्षा व्यवस्था हो जिससे उनको योग्यता के समकक्ष लाये जा सके तथा अन्तिम रूप से चयन का आधार योग्यता हो, तभी राष्ट्र में विवाद खत्म होगा। अत आरक्षण व्यवस्था अविलम्ब समाप्ति के लिए साहस जुटाना होगा तथा इस पर राष्ट्रव्याप्री चर्चा होनी भी जरूरी है।

मां का त्याग और हृदय

तामिलनाडू के एक साधारण परिवार में एक बेटी का जन्म हुआ। मित्र, पड़ोसी और सम्बन्धी सभी बधाई देने पहुंचे। मां ने बेटी के मुस्कराते चेहरे को देख कर गौर किया। डाक्टर के पास ले गये तो उसने बताया कि वह दृष्टिहीन है। माता पिता आवाक रह गये पर सिर्फ कुछ पल के लिये। अगले ही क्षण आत्मियता जागृत हो गई। मां ने बेटी को गले लगाया और यह तय किया कि वह अपने प्यार की ऐसी रोशनी करेगी कि उसकी बेटी को कभी यह ऐहसास ही नहीं होगा कि वह देख नहीं सकती मां शिक्षित गृहणी थी और पिता रेलवे में कार्यरत थे, पिता पुस्तकें लाते और मां पढ़ कर

सुनाता, पुत्री न केवल पढ़ने में अबल थी पर कालेज की वाक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पातीं

वह 2013 में बैंक अधिकारी बनी और बैंक के डूबते हुये ऋणों को बसूल करने में नाम कमाया। उसके अनुसार उसने एक दिन किसी पड़ोसी को पानी बरबाद करने पर टोका तो सुनने को मिला——लो आ गई कलक्टर साहिबा। यू पी एस सी परीक्षा में सफल हो कर भारतीय विदेश सेवा में पदार्पण किया।

यह कहानी बताती है कि मां क्या होती है। न तो उस के त्याग की गहराई को मापा जा सकता है और न ही उस के हृदय की विशालता को।

N L Beno Zephine

अंगहीन अपाहिज नहीं, अपाहिज वह है जिसका मन अपाहिज है

आशा गुप्तो

एक व्यक्ति समुद्र के किनारे स्थित एक ऊँची चट्टान से समुद्र में कूद कर आत्महत्या करने जा रहा था। तभी किसी ने पीछे से आकर उसको कसकर पकड़ लिया और मरने से बचा लिया। ये बचाने वाला व्यक्ति कोई महात्मा लग रहा था। उसने पूछा, 'भले आदमी ये क्या करने जा रहे थे?' व्यक्ति ने रोते हुए कहा, 'आपने मुझे मरने से क्यों रोका? मैं मरना चाहता हूँ।' 'पर क्यों?' 'क्योंकि मैं बहुत ही गरीब हूँ। मेरे पास कोई काम नहीं है। खाने को रोटी तक नहीं। ऐसी जिंदगी जीकर करूँ भी तो क्या करूँ?' उस व्यक्ति ने बड़े दुख के साथ कहा।

महात्माजी ने कहा कि मैं तुम्हारी गरीबी दूर करवा सकता हूँ। कैसे? 'बस तुम्हें सिर्फ अपने दोनों हाथ देने होंगे। उनके बदले मैं तुम्हें दो लाख रुपए दिलवा दूँगा और तुम आराम से रहना और खाना–पीना', महात्माजी ने कहा।

व्यक्ति ने कहा– 'ये कैसे संभव है, अपने दोनों हाथ तो मैं किसी भी कीमत पर नहीं दे सकता।'

तो फिर अपने दोनों पैर दे दो उनके बदले मैं तुम्हें चार लाख रुपए दिलवा दूँगा और तुम उनसे हर चीज खरीद कर आराम से रहना।', महात्माजी ने पुनः कहा।

व्यक्ति ने कहा कि ये भी असंभव है। मेरे पैर बेशकीमती हैं और मैं किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बेच सकता।

'चलो हाथ–पैर न सही अपनी दोनों आँखें दे दो उनके बदले में मैं तुम्हें पूरे दस लाख रुपए दिलवा दूँगा और तुम ऐश से जिंदगी बसर करना।', महात्मा ने एक बार फिर जोर देकर कहा।

अब तो उस व्यक्ति को गुस्सा आ गया और बोला, 'पैसों के बदले में मेरे शरीर के बहुमूल्य अंगों को बिकवाकर आप मुझे अपाहिज बनाना चाहते हो? मेरी गरीबी का मजाक उड़ाना चाहते हो?'

महात्माजी ने कहा, 'इतना अमूल्य शरीर होते हुए तुम गरीब कैसे हुए? और जहाँ तक अपाहिज होने का प्रश्न है अपाहिज वो नहीं होता जिसके कोई अंग नहीं होता, अपितु अपाहिज वो है जिसका मन अपाहिज हो चुका हो और जो परिश्रम करने के लिए अपने अंगों का सदुपयोग करने से बचता हो। तुम एक स्वस्थ व्यक्ति हो और तुम्हारे सारे अंग–प्रत्यंग सही–सलामत हैं तो तुम गरीब कैसे हुए?' दूसरा अभी तो तुम दस लाख रुपए में आंखे भी नहीं दे रहे और कुद देर पहले ही मुति में सारा शरीर देने लगे थे। इस से एक बात सपष्ट है कि तुम अपनी या इस मानव योनी की किमत ही नहीं जानते।

यदि हम अपने चारों ओर नजरें दौड़ाएँ तो पाएँगे कि मन से अपाहिज लोगों की संख्या तन से अपाहिज लोंगो से कहीं अधिक है ं। जो स्वस्थ शरीर होते हुए भी मन से विकलांग या अपाहिज हैं वे इस मानव योनी की कीमत ही नहीं जानते और जो कीमत जान जाते हैं वह बहुत बार पूर्ण रू से स्वस्थ से भी आगे निकल जाते है और ऐसे कार्य कर दिखलातें हैं जो सक्षम भी प्रायः नहीं कर पाते ।वे कभी भी दूसरों सा समाज पर बोझ बनते हैं।

अरूनिमा सिन्हा

हेलेन केलर, लुई ब्रेल, स्टीफन हॉकिंग, बाबा आमटे, सुधा चंद्रन आदि ऐसे नाम हैं जिन्होंने सिद्ध कर दिया कि शारीरिक विकलांगता भी मनुष्य के विकास में बाधक व अभिशाप नहीं। हम चाहें तो अपने शारीरिक विकलांगता रूपी अभिशाप को वरदान में परिवर्तित कर सकते हैं। इसके लिए जरूरत है तो मात्र जज्बे और आत्मविश्वास की। जिस व्यक्ति में स्वयं कुछ करने का जज्बा और आत्मविश्वास नहीं, जिसमें मनुष्य की अपरिमित क्षमताओं पर विश्वास नहीं और जो सदैव निराशा व नकारात्मक विचारों से घिरा रहता है वही वास्तविक विकलांग है। शारीरिक नहीं, बल्कि मनुष्य की मानसिक विकलांगता ही उसके विकास में सबसे बड़ी बाधा है। पिछले दिनों एवरेस्ट पर्वत पर सफलतापूर्वक चढ़ने वाली एक पांव से वंचित अरूणिमा सिन्हा हो या फिर 2005 में दोनों पांवों से विकलांग मार्क इंगलिस हो या फिर 2015 में आइ ऐफ ऐस आफिसर बनने वाली नेत्रहीन महिला बेना जेफाईना हो ये सभी इस बात का संदेश देते हैं अंगहीन अपाहिज नहीं, अपाहिज वह है जिसका मन अपाहिज है

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

अनुपम परिवार के साथ आश्रम के बच्चें।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

नरेन्द्र गुप्ता

लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Urvashi Goyal

Raj Rani Kapoor

Nirmal Verma

Yoginder Pal Nayyar and Pushpa Wati Nayyar

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870